डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष के लिए।

दिनांक- 30.04.2020
(व्याख्यान संख्या- 17)

* सूरदास के भ्रमरगीत का वैशिष्ट्य

हिन्दी साहित्याकाश का जाज्वल्यमान नक्षत्र ही नहीं बल्कि उसका सूर्य कहलाने वाले सूरदास रचित 'सूरसागर' मे भी वस्तुतः भावना का सागर है 'भ्रमरगीत'। वास्तव में भ्रमरगीत सूरसागर का सबसे मर्मस्पर्शी और वैदग्ध्यपूर्ण अंश है। इसमें कविता और शास्त्र एकाकार हो गये हैं। 'भ्रमरगीत- में सगुण ने निर्गुण पर, सरसता ने शुष्कता पर, प्रेम ने दर्शन पर, भक्ति ने ज्ञान पर, राग ने वैराग्य पर, आसक्ति ने अनासक्ति पर और संयोग ने वियोग पर विजय पायी है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में -- "भक्तों में मशहूर है सूरदास उद्धव के अवतार थे। यह उनके भक्त कवि जीवन की सर्वोत्तम आलोचना है। सूर ने अपने काव्य में एक ही जगह भगवान का साथ छोड़ा है-- भ्रमरगीत में। और इस बात में कोई संदेह नहीं कि इस अवसर पर सूरदास को दूना रस मिला था।" आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कहना है कि "ऐसा सुंदर उपालंभ काव्य दूसरा नहीं मिलता। उसमें गोपियों की वचनवक्रता अत्यंत मनोहारिणी है। गोपियों की वियोग दशा का जो धाराप्रवाह वर्णन है उसका तो कहना ही क्या है। न जाने कितनी मानसिक दशाओं का संचार उसके भीतर है, कौन गिन सकता है? सूर ने ऐसे भावों का वर्णन किया है जिनकी गणना आचार्यों ने संचारी आदि भावों में नहीं की है। इसके लिए अलग नामों के आविष्कार की आवश्यकता है। शृंगार रसराज कहलाता है। इस दृष्टि से यदि सूरदास को रस सागर कहें, तो बेखटके कह सकते हैं।"

सूरदास के भ्रमरगीत के अनुसार उद्धव कृष्ण भक्त होने के साथ निर्गुण मार्ग के अनुयायी भी थे। कृष्ण ने उनके ज्ञान के गर्व को चूर करने के लिए उन्हें गोपियों के पास अपना संदेश कहने को भेजा। वे उद्धव को भक्ति और प्रेम की तीव्रता का अनुभव कराना चाहते थे। उद्धव कृष्ण का संदेश लेकर गोपियों के पास पहुँच गये। वे अपने निर्गुण ब्रह्म पर व्याख्यान देने लगे। सूरदास ने इसका मनोहारी वर्णन किया है। इस संवाद में उद्धव और गोपियों के बीच अनेक प्रकार से मान-मिलाप, नोक-झोंक और तर्क-वितर्क हुए। अंत में उद्धव निराश हृदय से हारे हुए योद्धा के समान लौटकर कृष्ण को गोपियों के अनन्य प्रेम की कहानी सुनाते हैं। पर इस छोटे से स्थल में जो वचनवक्रता, वाग्वैदग्धता और कलात्मकता है, वह अत्यंत

सुंदर है। सूर ने इस प्रसंग को श्रीमद्भागवत से हूबहू न लेकर अनेक मौलिक उद्भावनाओं से काम लिया है। श्रीमद्भागवत महापुराण में उद्धव यशोदा और नंद को संदेश देने आते हैं। गोपियाँ उन्हें एकांत में बुलाकर कुछ सुनती और सुनाती है। किंतु सूर ने नवीन कल्पना की है। उद्धव ज्ञान की गठरी को सँभाले आ ही रहे थे कि उनके रथ को दूर से देखकर गोपियाँ सरपट भागी जाती है और उद्धव से अपने प्रियतम के कुशल के समाचार पूछती हैं। उन्हें यह पता ही नहीं था कि उनके हृदय पर निर्गुण, निराकार और योग के ज्ञान की गाज इतने निर्मम रूप से गिरेगी। यहाँ गोपियों और उद्धव के बीच नंद और यशोदा का व्यवधान नहीं है। सूरदास की अलि, भ्रमर और मधुप आदि की योजना अत्यंत मनोहारिणी है। उद्धव गोपियों के अतिथि और प्रियतम के संदेशवाहक थे। आदरणीय अतिथि को बुरा-भला कहना आतिथ्य धर्म के प्रतिकूल था। अतः भ्रमर के ब्याज से उन्होंने अपने अरमान निकाले। उद्धव और कृष्ण दोनों भ्रमर-व्रतधारी हैं। ऊपर से तो काले थे ही, भीतर से भी काले थे -- "यह मथुरा काजर की कोठरी जे आवहिं ते कारे।" भ्रमर प्रेम की रीति नहीं जानता। वह रसलोभी होता है। कृष्ण भी गोपियों को छोड़कर कुब्जा में रम गये थे। अतः वे भ्रमर ही हैं। सूरदास ने अपने इस गोपी-उद्धव संवाद में राधा को तटस्थ दिखाया है। वस्तुतः सूरदास ने भ्रमरगीत में गोपियों के माध्यम से अपने हृदय के समस्त मधुर रस को द्राक्षारस के सामान निचोड़ कर रख दिया है। जहाँ सभी ओर रस ही रस और माधुर्य ही माधुर्य है। नंददास के भ्रमरगीत में तर्क, प्रमाण एवं बुद्धितत्त्व की अधिकता है। वहाँ गोपियाँ एक चतुर वकील की तरह हैं। उनमें और उद्धव में एक बड़ा तर्कपूर्ण विवाद ही चल पड़ता है। नंददास को भाषिक चातुर्य के कारण 'जड़िया' कहा गया है। निश्चय ही उनका भ्रमरगीत भाषा की दृष्टि से अति उत्तम बन पड़ा है; परंतु भावों के क्षेत्र में सूरदास का भ्रमरगीत बहुत आगे है। बाद के कवियों में जगन्नाथदास रत्नाकर का भ्रमरगीत भी प्रसिद्ध है। रत्नाकर में सूरदास की भावुकता, नंददास का तर्क और रीतिकालीन अलंकारिकता का सम्मिश्रण है। इनके उद्धव शतक का आरंभ में भी निराला है। परंतु, भावना की गहराई और सहज संप्रेषण में वे सूर को नहीं छू पाते हैं। निस्संदेह सूरदास का भ्रमरगीत इस परंपरा की काव्यधारा में शीर्ष स्थानीय है। यदि यह कहा जाए कि अन्य कवियों का भ्रमरगीत भी मुकुट के समान शीर्ष स्थानीय है तो यह कहना अनुचित न होगा कि सूरदास का भ्रमरगीत मुकुट-मणि के समान है।